हिन्दू

शब्द की उत्पत्ति और इतिहास



विश्व हिन्दू परिषद् प्रकाशन

निवेदन

विश्व में रहने वाले ६० करोड़ हिन्दुओं को एक सूत्र में जोड़ने वाला शब्द 'हिन्दू' है। किसी राष्ट्र, जाति, अथवा समाज की शक्ति उसके आत्म गौरव की अनुभूति में निहित रहती है।

हिन्दू धर्म तथा संस्कृति के शत्रुओं ने 'हिन्दू' नाम के संबंध में भ्रामक प्रचार कर हिन्दू समाज को स्वाभिमान शून्य करने का प्रयत्न विगत शताब्दियों के राजनीतिक संघर्ष काल में किया। सबसे बड़ा दुख इस बात का है कि अपने ही कुछ बन्धु इस छल कपट पूर्ण प्रचार का शिकार बन गये। इन्हीं भ्रान्तियों के निरसन हेतु यह लघु प्रयास है।

पुस्तक का यह चौथा संस्करण है। इसे अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है।

हिन्दू की परिभाषा ठीक हृदयङ्गम करने के साथ हिन्दुत्व के प्रति अपने कर्तव्य का भी बोध होता है।

यदि हम चाहते है कि संसार में भारत गौरवशाली राष्ट्र बने और अहिन्दू समाज भी हिन्दू भावना का सम्मान करें तो हिन्दू धर्म की मूलभूत मान्यताओं को समझना और समझाना अनिवार्य शर्त है।

म० गांधी के शब्दों में—

"केवल हिन्दुओं को ही नहीं वरन सभी भारत वासियों को हिन्दू धर्म की सर्व सामान्य मूलभूत मान्यताओं से परिचित होने की आवश्यकता है। अपने तात्विक रुप में हिन्दुत्व सबको स्वीकार होने योग्य है। इसका मूलाधार नैतिकता है आदि।"

आइये ! विश्व हिन्दू परिषद् के साथ सहकार्य कर

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का स्वप्न साकार करें।

विनीत

[illegible]

प्रचार मंत्री-विश्व हिन्दू परिषद्-उ० प्र०

संस्तुति

हिन्दू शब्द की परिभाषा इस पुस्तिका में बहुत सुन्दर रूपसे की गयी है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में इस शब्द का व्यापक प्रयोग किया गया है। यह उस विशाल समाज को संबोधित करता है जिसकी संस्कृति की धारा इस देश में अनादि काल से प्रवाहित है। यदि हिन्दू नहीं रहेंगे तो इस देश का वह स्वरुप नहीं रहेगा जिसे हमारे ऋषियों, सन्तों, योगियों और आचार्यों ने अपने तेज तपस्या और विद्या के बल से भूषित किया है। आज हिन्दुओं पर अनेक रूप से गंभीर प्रहार हो रहे हैं। चाहे, भारत के हिन्दू हो चाहे पृथ्वी के अनेक देशा में फैले हुए हिन्दू हों, इन सभी का यह कर्तव्य है कि वे उस अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को जो इन्हें मिली है उसकी रक्षा करें, उसे और पल्लवित करें, और हिन्दू नाम को गौरवान्वित करें।

महात्मा गांधी के निम्नलिखित वाक्य उल्लेखनीय हैं :

"हिन्दुत्व की गति में आज अवरोध उत्पन्न हो गया है, अकर्मण्यता आ गई हैं, इसका विकास मन्द हो गया है तो इसका एक मात्र कारण युगों-युगों से कार्यरत रहने की थकान है, यह विश्राम काल समाप्त होगा और हिन्दुत्व पहले से अधिक अपनी अलौकिक प्रभा प्रसारित कर विश्व पर छा जायगा।"

उपयुक्त विश्राम काल अब समाप्त हो गया है। यह पुस्तिका हिन्दूत्व के नवीन युग के बालार्क की रश्मियों को दीप्तमान करती है।

(न्यायमूर्ति) शिवनाथ काटजू
अ० प्रा० न्यायाधीश, प्रयाग उच्च न्यायालय
अध्यक्ष
विश्व हिन्दू परिषद्-उत्तर प्रदेश व बिहार

रामदेव त्रिपाठी

'हिन्दू' जीवन रचना

सनातन धर्म, हिन्दू धर्म या हिन्दू जीवन पद्धति की अवधारणा अद्भुत है। इसमें वह सब कुछ समाविष्ट है जो मानवता के कल्याण के लिए अभीष्ट है। यह विश्व का प्राचीनतम धर्म या जीवन रचना है। अत्यधिक प्राचीन होते हुए भी इसमें आधुनिकता के सभी विचारों को अपने में पचा लेने की कल्पनातीत क्षमता है। शान्ति एवं आत्मज्ञान के लिए सम्पूर्ण जगत सदैव हिन्दू धर्म की ओर उन्मुख रहा है।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—चतुर्विध पुरुषार्थ द्वारा हिन्दू जीवन पद्धति ने सम्पूर्ण मानव की प्रतिष्ठा की है और उसके वहिर्जगत और अन्तर्गत दोनों को सुखमय बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

उपासना की स्वतन्त्रता

उपासना की स्वतन्त्रता व सहिष्णुता हिन्दू धर्म की विशेषता है। धर्म का मत, मजहब, सम्प्रदाय निरपेक्ष रूप ही मानव मात्र में एकात्मता का भाव जगाकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इसी दृष्टि से हिन्दू-जीवन-दर्शन सर्वश्रेष्ठ है। इस युग की मांग है कि एक ऐसा धर्म हो जो विश्व की समस्त मानवता को अपने पाश में समेट सके। ज्ञान विज्ञान के प्रकाश में तथा दीर्घ-कालीन अनुभव के आधार पर हिन्दू धर्म या सनातन धर्म ही इस कसौटी पर खरा उतरता है। महात्मा गांधी के शब्दों में हिन्दूधर्म का मूलाधार नैतिकता तथा सदाचार है तथा वह सबको स्वीकार होने योग्य है।

रीति-रिवाजों की रूढ़ियाँ धर्म नहीं

विगत लगभग हजार बारह सौ वर्ष की राजनैतिक उथल पुथल तथा संघर्ष में कतिपय रूढ़ियां तथा रीति-रिवाजों की कुंठायें उत्पन्न हो गयीं, जिनसे हमारा सामाजिक जीवन बोझिल हो गया। देश काल को बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार समाज की रीति-नीतियों को दिशा देने के उद्देश्य से पूर्व काल में मनु, पाराशर, याज्ञवल्क्य से लेकर देवल तक अनेक स्मृतिकार हुए जिन्होंने समय-समय पर बदलती हुई देश काल की परिस्थितियों के अनुसार समाज को दिशा दी किन्तु विगत संघर्ष काल में कोई नया स्मृतिकार नहीं हुआ। हिन्दू समाज की लम्बी इतिहास यात्रा में, उसके क्रमिक विकास तथा सतत् सत्यान्वेषण की मनोवृत्ति को न समझकर संघर्ष काल में समाज रक्षा के लिए अपनायी गयी रीति नीतियों को ही कुछ लोग धर्म मानने लगे। परन्तु, भारत वसुन्धरा रत्नगर्भा है। समय-समय पर अनेक महापुरुषों तथा साधु-सन्तों ने जन्म लिया और समाज को नई राहें दिखाईं और रूढ़ियों को तोड़कर सुधार की ओर अग्रसर किया। महावीर, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, रामानन्द, रैदास, नानक, गोस्वामी तुलसीदास और समर्थ गुरु स्वामी रामदास से लेकर रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, डा० हेडगेवार और श्री गुरुजी आदि महापुरुष इसी हिन्दू जीवन रचना से निकली महती शक्तियां थीं जिनके कारण हिन्दू जीवन अनेक विविधताओं में सामञ्जस्य स्थापित कर, संघर्षों को मात देकर, आगे बढ़ने में सक्षम हुआ है।



संगठन की आवश्यकता

अनेक विचारों तथा संस्कृतियों के बीच संघर्ष की रोचक कथायें अपने इतिहास तथा पुराणों में लिखी हैं। यह संघर्ष आज भी विद्यमान हैं। यह संघर्ष केवल संस्कृति और विचारों तक सीमित नहीं है। राजनीतिक स्वार्थों की भी लड़ाई चलती रहती हैं। देश का विभाजन, पाकिस्तान और बाद में बगलादेश का निर्माण, सरकारी नौकरियों में संख्या के अनुपात से आरक्षण, उर्दू के लिए जद्दो जेहद, नागालैण्ड, मेघालय, मिजोरम आदि अनेक अंचलों में ईसाईयों की बड़े पैमाने पर ईसाईकरण की नीति, मुसलमानों द्वारा मुसलमान बनाने की मुहिम जिसे उनकी भाषा में 'दावा' कहते है, यह चुनौतियां प्रत्येक हिन्दू के सामने हैं। इन अनेक प्रश्नों का एक ही उत्तर है–हिन्दू संगठन, हिन्दू स्वाभिमान का जागरण। हमें हिन्दू जीवन रचना इतनी समक्ष तथा अपना सामाजिक संगठन इतना प्रभावी बनाना चाहिये कि उसका सर्व हितकारी, विश्वव्यापी, सर्वस्पर्शी तथा सर्व-संग्रहक, वास्तविक रूप निखर कर सामने आवे तथा उसकी अस्मिताओं पर अक्रमण करने की दुर्भावना किसी के मन में उत्पन्न न हो।

हिन्दू संगठन कैसा हो

हिन्दू समाज संगठित करने का अर्थ है अपने दैनन्दिन जीवन में यह विचार रखना कि हम हिन्दू हैं और अपने जीवन का प्रत्येक व्यवहार हिन्दू आदर्शों के अनुसार ढालना। जीवन के सभी क्षेत्रों में हमारी भावात्मक निष्ठा और एकता की छाप स्पष्ट रूप से व्याप्त होनी चाहिए। यही हमारा सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है।

संगठन का आधार—'हिन्दू' शब्द

विश्व में रहने वाले लगभग ६० करोड़ के विशाल हिन्दू समाज को 'सूत्रे मणिगणाइव' भावात्मक एकता में सूत्रबद्ध करने वाला एक शब्द 'हिन्दू' है। यदि हिन्दू नाम हटा दिया जाय तो यह बृहत् हिन्दू परिवार अलग-अलग और कभी परस्पर विरोधी मत-सम्प्रदायों, पंथों-उपपंथों तथा राजनीतिक दलों में विभाजित जनसमूह मात्र रह जाता है। 'हिन्दू' नाम ही हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक संगठन तथा आत्म गौरव का आधार है। किसी जाति, राष्ट्र अथवा समाज की शक्ति उसके आत्मगौरव में निहित रहती है। स्वाभिमान-शून्य तथा आत्मगौरव-हीन समाज अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता।

लोक व्यवहार में ऐसा कोई भी ज्ञान नहीं है जो शब्द से अनुबद्ध न हो। 'कमल' कहते ही उसकी सुगन्ध, रूप-रंग, स्मृति पटल पर प्रति-बिम्बित हो उठती है। नाम के साथ ही उस वस्तु के विशेष गुणों का स्मरण होता है।

देखिअहि रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम बिहीना।
रूप विशेष नाम बिनु जाने। करतल गत न परहिं पहचाने॥

नाम का ऐसा व्यापक प्रभाव होता है। व्याकरण शास्त्र में 'नाम' को 'संज्ञा' कहते हैं। संज्ञा शब्द का अर्थ ही है अच्छी प्रकार ज्ञान कराने वाला। नाम का यथार्थ ज्ञान न हो तो नामोच्चारण मात्र से हृदय में जो भाव उत्पन्न होते हैं, या कल्पना से जो चित्र बनता है, वह अवश्य ही विकृत होंगे। नाम के विना रूप और रूप के बिना नाम का बोध नहीं होता। दोनों अनन्योन्याश्रय सम्बन्ध से जुड़े रहते हैं। गाय कहते ही हमें उसकी आकृति का ज्ञान होता है। शब्द और अर्थ अविभक्त रूप से साथ रहते हैं। प्रत्येक शब्द का अपना एक भाव चित्र होता है।

अतः हिन्दू शब्द की उत्पत्ति, उसका इतिहास तथा परिभाषा जानने की आवश्यकता है। इसलिए यह और अधिक आवश्यक हो गया है क्योंकि हिन्दू समाज के शत्रुओं ने अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण 'हिन्दू' शब्द के सम्बन्ध में अनेक भ्रम उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है और अपने साहित्य में उसकी गलत अर्थ योजना की है।

हिन्दुओं का गौरवशाली अतीत

भारत, अरब, ईरान, मिश्र आदि देशों के प्राचीन साहित्य तथा इतिहास के अनुशीलन आधार पर अब यह निर्विवाद है कि निकट पश्चिमोत्तर देशों में इस्लाम अभ्युदय से पूर्व हिन्दू धर्म का व्यापक प्रचार था और 'हिन्द' तथा 'हिन्दू' को बड़े गौरव का स्थान प्राप्त था। सभ्यता, संस्कृति और अध्यात्म की दृष्टि से भारत 'जगद्गुरु' था और धन वैभव की दृष्टि से 'सोने की चिड़िया'।

महाभारत के अनुसार सप्त गणों को पाण्डवों ने परास्त कर उन्हें पीछे हटने पर बाध्य किया था। इन्हीं सप्तगणों में से किसी एक गण ने आगे बढ़कर 'उपगण' या 'अपगण' राज्य की स्थापना की जो आगे चलकर अफगानिस्तान प्रसिद्ध हुआ। अफगानिस्तान का शुद्ध उच्चारण 'उपगणस्थान' है। महाभारत का प्रसिद्ध गांधारी, जो धृत राष्ट्र की पत्नी थी, इसी देश की राज कुमारी थी।

इसी प्रकार बलूचिस्तान भी बलोच्चस्थान का अपभ्रंश है। इसमें केलात (कलात) नामक नगर आज भी विद्यमान है। यह केलात तब का है जब किरात नामी आर्य क्षत्रिय यहाँ आकर बसे थे। यह क्षत्रिय होने से बल में उच्च स्थान प्राप्त कर सके थे। इसीलिए अपने स्थान का नाम बलोच्चस्थान रखा था।

अफगानिस्तान के आगे 'ईरान' है जिसे पारश्य या पारस देश भी कहते हैं। यहाँ पहले वह जाति आबाद थी जो आजकल हिन्दुस्तान में पारसी नाम से प्रसिद्ध है। यह जाति प्राचीन काल में ही आर्यों से जुदा होकर ईरान में आबाद हुई थी। (It can now be proved by Geographical evidence that Zoroastrian had been settled in India before they migrated into Persia-Chips from a German workshop)–वे यहाँ से नदियों के नाम ले गये। उन्होंने 'सरस्वती' के स्थान पर 'हरहवती' और 'सरयू' के स्थान पर 'हरयू' नाम रखा। वे अपने साथ शहरों के नाम भी ले गये। उन्होंने 'भारत' को 'फरत' किया और वही फरत 'यूफरत' हो गया। उन्होंने भूपाल (न) को बेबिलन और काशी की कास्सी (Cossoci) तथा आर्यन को ईरान नाम से प्रसिद्ध किया। इस वर्णन से ज्ञात हुआ कि पारसी भी भारतीय आर्यों की शाखा हैं।

ईरान के पास ही 'अरब' हैं। वैदिक भाषा में अर्वन घोड़े को कहते हैं और जिस जगह घोड़े रहते हैं उस स्थान को 'अर्ब' कहते हैं। जिस प्रकार गौओं की बड़ी चरागाह को 'बृज' और भेड़ बकरी वाले देश को 'गन्धार' कहते हैं इसी तरह जहाँ अच्छी जाति के घोड़े रहते हैं उसको 'अर्ब' कहते हैं। अब भी अरबी घोड़ा सर्वोपरि समझा जाता है। उत्तम घोड़े उत्पन्न होने के कारण आर्यों ने इस देश का नाम 'अर्ब' रक्खा था। स्मृतियों को पढ़ने वाले जानते हैं कि आर्यों से उत्पन्न एक वर्ण जाति को 'शैख कहते हैं।

व्रात्यालु जायते विप्रात्पापात्मा भूर्ज कण्टकः।

भावन्त्य वात्टधानौ च पुष्पधः शैखएव च॥ (मनुस्मृति १०-२१)

शेखों का अरब में वही मान है जो भारत में ब्राह्मणों का है।

यह प्रसिद्ध बात है कि मुसलमान होने के पहले वहाँ के निवासियों

में ब्राह्मण भी थे। अरब से ही रामानुज सम्प्रदाय के मूल प्रचारक 'यावनाचार्य' भारत आये थे। उस समय यहाँ महात्मा शटकोप आदि आन्दोलनकर्ताओं को यावनाचार्य ने मदद की। एशियाटिक रिसर्चेज भाग १० में विलफोर्ड नामक विद्वान लिखित निबन्ध छपा है। उसके अनुसार **'यावनाचार्य'** का जन्म अरब देश के एक ब्राह्मण कुल में हुआ था और अलेक्जेन्ड्रिया के प्रसिद्ध विश्व विद्यालय में उन्होने शिक्षा पाई थी।

हिंदुत्व का विस्तार

वैदिक काल में अन्य धर्मावलम्बियों को वैदिक धर्म अथवा सनातन धर्म में लेने की प्रक्रिया को 'व्रात्यस्तोम' कहते थे। अनेक देशों तथा वर्णों तथा जातियों को सनातन धर्म ने अपने बहुपाश में समेटने का काम किया है। ऋषि पुलस्त्य धर्म प्रचार के लिए आस्ट्रेलिया गये थे। वहां के राजा तृणविन्दु की पुत्री से उनका विवाह हो गया। उसी से विश्रवा पैदा हुआ जो रावण का पिता था। रावण का राज्य समस्त दक्षिणी टापुओं आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, मेडागास्कर आदि में फैला था।

कण्व ऋषि ने मिश्र देश में जाकर वहां के दस हजार निवासियों को यहाँ का धर्म और भाषा सिखाकर आर्य (हिन्दू) बनाया। पहले उनको शूद्र कोटि में रखा, फिर उनमें से कुछ अपने गुण कर्मानुसार वैश्य बन गये और कुछ क्षत्रिय। पुराणों, महाभारत, रामायण में सनातन धर्म प्रचार व प्रसार की अनेक कथायें कही गई हैं। उन्हें समझकर पढ़ने से और युगानुसार आचरण करने से 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' का मंत्र पुनः साकार किया जा सकता है। यह सारी कथा भविष्य पुराण में लिखी है।

परिणामतः प्रायः सभी प्रधान-प्रधान देशों के रहने वाले जिनके आचार-व्यवहार, रीति-रस्म, खानपान, अवैदिक थे आर्यों में मिल गए और उनके आचार विचार आर्यों में दाखिल हो गए। यह मिश्रण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी वर्णों में हुआ तथा सतत् विकासमान सनातन धर्म की लम्बी यात्रा तथा राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उथल पुथल में सबको समाविष्ट करने वाला नाम 'हिन्दू' प्रचलित हुआ हो तो कुछ आश्चर्य नहीं। हिन्दू नाम कब से चला इसका ठीक पता इतिहास अभी तक नहीं लगा पाया है। किन्तु यह निर्विवाद है कि यह नाम विशाल भारत में रहने वाले जन का था जिस में अनेक प्रकार से पूजा उपासना करने वाले लोग शामिल थे।

ईसा मसीह से लगभग दो शती पूर्व यूनान का राजा मिलिन्द (King Menander) अपनी धार्मिक जिज्ञासा पूर्ति के लिए भारत आया था और नागसेन से ज्ञान प्राप्त कर बौद्ध धर्मानुयायी बन गया था। अगाथाकल्स नाम के एक अन्य राजा ने अपने सिक्कों पर बुद्ध की प्रतिमा अंकित करवाई थी और अपने को 'हिन्दजा' (अर्थात् हिन्द देश में जन्म लेने वाला) कहता था। तक्षशिला निवासी हीलियोडारिस ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था और एन्टियालिस का दूत बनकर शुङ्ग राजा भागभद्र के दरबार में विदिसा आया था। यहाँ आने की स्मृति में उसने एक गरुड़ स्तंभ का निर्माण कराया था। हिन्दू ज्ञान विज्ञान के विद्वान ब्राह्मण कल्याणमस्त, (कालानूस) को सिकन्दर अपने साथ ले गया था। महाराजा ययाति के दूसरे पुत्र का नाम तुरबसु था। इसे पश्चिम देश का राज्य मिला था। तुरबसु ने ही अपने नाम पर तुरबसु स्थान राज्य का निर्माण किया जो आगे बदल कर तुर्किस्तान या अंग्रेजी में टर्की हो गया। मनुस्मृति के अनुसार पौण्ड्र, औण्ड्र,

द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्लव, चीन, किरात, दरद, खस आदि जातियां इन देशों में संस्कार कराने वाले ब्राह्मणों के न रहने से धीरे-धीरे संस्कार हीन होकर दस्यु बन गयीं।

इस्लाम से पूर्व 'हिन्दू'

मोहम्मद साहब से पहले अरब देशों में शिव पूजा प्रचलित थी। उस समय की प्राप्त कविता में भारत के लिए 'हिन्द' शब्द का प्रयोग पाया जाता है। स्वयं मोहम्मद साहब के एक चाचा उमर बिन हश्शाम अच्छे शायर थे, उन्होंने अपनी शायरी में **'हिन्द'**, **'हिन्दू'** और **'महादेव'** का नाम बड़े आदर के साथ उल्लेख किया है। जिरहम बिनतोई एक दूसरे अरबी शायर के अनुसार सम्राट विक्रमादित्य के शासन का विस्तार अरब देशों तक था और उसने वहां हिन्दू धर्म प्रचारक भेजे थे। यह शायरी **सेरूल अकूल** नामक अरबी काव्य संग्रह में संग्रहीत है। यह काव्य संग्रह इस्तम्बोल के राजकीय पुस्तकालय में सुरक्षित है।

उमर बिन हश्शाम का उपनाम अबुल हकीम अर्थात् ज्ञान का पिता था जिसको द्वेष या पक्षपात के कारण बदल कर मुसलमानों ने "अबू जिहल" अज्ञान का पिता कर दिया। इन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया तथा एक युद्ध में मुसलमानों से लड़ते लड़ते परलोकवासी हुये।

अरबी भाषा में इनकी कविता

कफाविक जिकरामिन उलूमिन तब असेरू।
कलूबन अमततुल हवा व तजक्करू ॥१॥
वसतजकेरोहा ऊदन एललवदए दिलवरा।
वलुकयाने जाल अल्लाहे यौम तब असेरू ॥२॥

व अहलोलहा अजह अरमीमन **महादेवओ** ।
मनाजिल इलमुद्दीने मिनहुम, वसयतरू ॥३॥
व सहबी केयाम फी मकामिल **हिंदे** यौमन ।
व यकूलन लातहजन फ इन्नक तवज्जरू ॥४॥
मअस्सयरे अखलाकुन हसनन कुल्लहुम ।
नजूमुन अजाअत सुम्म गाबुल **हिन्दू** ॥५॥

अर्थात्

(१) वह मनुष्य जिसने सारा जीवन पाप और अधर्म में बिताया हो, काम क्रोध में अपने जीवन को नष्ट किया हो।

(२) यदि अन्त में इसको **पश्चाताप** हो और भलाई की ओर लौटना चाहे तो क्या इसका कल्याण हो सकता है ?

(३) एक बार **भी सच्चे हृदय** से वह 'महादेव' की पूजा करे तो धर्म मार्ग में उच्च से उच्च पद को पा सकता है।

(४) हे प्रभू ! मेरा समस्त जीवन लेकर एक दिन हिंद निवास का दे दो क्योंकि वहाँ पहुँच कर मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है।

(५) वहाँ की यात्रा से सारे शुभ कर्मों की प्राप्ति होती है और आदर्श (हिन्दू) गुरुओं का सत्संग मिलता है।

वेदों की स्तुति

कवि का नाम **"लबी बिन अखतब बिन तुर्फा"**। यह अरब देश में हजरत मोहम्मद से भी २३०० वर्ष पहले हुये। इनकी अरबी भाषा में कविता निम्नलिखित है।

अया मुबारकेल अरज़ य मैसे नोहा मिलन हिन्दे ।

व अरादकल्लाहः मञ्योनज्जेल जिकरतुन ॥ १ ॥

वहल तजल्लीयतुन एनाने सहबी अखअतुन जिकरा।
वहाजे हो योनज्जेलुर्रसूल मिनल **हिन्दतुन** ॥ २ ॥
यकूलुनल्लाहः या अहलल अरज अलमीन कुल्लहुम ।
फत्तब्रेऊ जिक़रतुल **वेद** हक्कुन मालम योवज्जे लतुन ॥३॥

व होवा आलमुस्साम वल **यजुर** मिनल्लाहे तनजीलन ।
फऐनोमा या अखीयों मुत्तबेअन यो बश्शेरी यो नजातुन ॥४॥
व इसनैन हुमा **रिक अतर** नासिहीन क अखवतुन ।
व असनात अला ऊदन वहोवा मशएग्तुन ॥ ५ ॥

—सेअरुल अकूल (पृष्ठ १५७)

अर्थात्

हे हिन्द की पुण्य भूमि तू धन्य है क्योंकि ईश्वर ने अपने ज्ञान के लिए तुझ को चुना ।

वह ईश्वर का ज्ञान प्रकाश जो चार प्रकाश ज्ञान स्तम्भों के सदृश सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता है हिन्द के ऋषियों द्वारा चार रूप में प्रकट हुए ।

और परमात्मा समस्त संसार के मनुष्यों को आज्ञा देता है कि वेद, जो मेरे ज्ञान हैं, इनके अनुसार आचरण करो ।

वह ज्ञान के भण्डार साम और यजुर हैं जो ईश्वर ने प्रदान किये । इसलिये हे मेरे भाइयों इनको मानो क्योंकि यह हमें मोक्ष का मार्ग बताते हैं ।

और दो उनमें से रिक अतर (ऋग्वेद और अथर्ववेद) हैं जो हम को भ्रातृत्व की शिक्षा देते हैं, जो इनके प्रकाश में आ गया वह कभी अन्धकार को प्राप्त नहीं होता ।

(उपरोक्त दोनों उद्धरण लक्ष्मी नारायण मंदिर-दिल्ली की शिला वाटिका में अंकित हैं ।)

अपने काल के सर्वाधिक प्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्री, 'वृहत संहिता' के रचयिता वाराह मिहिर, जो विक्रमादित्य के नौरत्नों में से एक थे, वे विक्रमादित्य के दूत बनकर रोमन सम्राट आगस्टस से मिले थे। दोनों देशों के बीच व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध होने का यह प्रमाण है।

हिन्दू का गौरव

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी साप्ताहिक **अरगेनाइजर** में डा० जीलानी की लेखमाला प्रकाशित हुई थी। इसके अनुसार अरब में अनेक महिलाओं का नाम 'हिन्द' था। पैगम्बर मोहम्मद की अनेक पत्नियाँ थी, उनमें से भी एक का नाम 'हिन्द' था। प्रेम कथा साहित्य की सुप्रसिद्ध नायिका लैला का भी असली नाम हिन्द था। सय्यद सुलेमान नदवी लिखित **सीरतुन्नबी** के अनुसार अमीर मुवाइया की मां रईसुल अरब अतब की पुत्री का नाम 'हिन्द' था। हिन्दू तथा हिन्द शब्द के लिए उस समय संसार में इतना आदर था।

अरबी लिपि के सम्बन्ध में प्राचीन भाषा इतिहास विद् श्री वाकणकर ने लिखा है--

"××× यहाँ की अरबी लिपि भारतवासियों ने उनको दी है। अरबी लिपि का मूल रूप 'कुफिथ' था जो इसके पूर्व नेविटियन लिपि से विकसित हुई थी। नेविटियन का रूप ब्राह्मी से पूर्णतया मिलता है। यह प्रभाव विक्रम पूर्व चौथी शताब्दी में गया था। मक्का में ब्राह्मी से परिवर्तित स्वरूप मोहम्मद पैगम्बर के पूर्व स्थिर हो चुका था। काबा के विशाल मंदिर में जिसे मक्केश्वर कहते थे। प्रति पाच वर्ष में अखिल अरब कवि सम्मेलन होता था। उसमें सर्वश्रेष्ठ कवि की रचना स्वर्ण फलक पर अंकित कर प्रदर्शित की जाती थी। मोहम्मद साहब ने जब काबा पर कब्जा किया तो सभी ग्रन्थों को जलाया जाने लगा पर कवि की

विनती पर कुछ सुवर्णांकित काव्य के नमूने बच गए। आगे चलकर

हरून अल रशीद खलीफा ने मोहम्मद पूर्व काव्य का संग्रह कर एक ग्रन्थ तैयार किया जिसमें 'महादेव' 'हिन्दू' तथा 'विक्रमादित्य' का ससम्मान उल्लेख किया गया है ।

अन्य साक्ष्य

दक्षिण तुर्किस्तान में बोगाझकोई स्थान पर दो शिला लेख मिले हैं (विक्रम पूर्व १५००-१८००) जो वहां हित्ती (हस्तिन) लोगों के अस्तित्व एवं साम्राज्य के निदर्शक हैं। प्रथम शिला लेख में सन्धि के उपरान्त उसके संरक्षण हेतु इन्द्र, नासत्य एवं वरुण का आवाहन किया गया है ।

एक पारसी स्तोत्र में कहा गया है कि श्रौत नाम का यष्ट (यक्ष) अपने दिव्य रथ पर बैठकर पूरब दिशा में स्थित हिंद्वो (हिन्द) देश से रोज निकलता है और पश्चिम के निग्ने नाम के प्रदेश तक संचार करता है। निग्ने संभवत: नैनेन्हुआ शहर था जिसे बेबीलोनिया के लोगों ने ६१२ ई० पू० नष्ट भ्रष्ट कर दिया था।

पारसियों की प्रमुख पत्रिका '**पारसियाना**' के फरवरी १९६६ अंक में श्री बहरूम पिठावाला ने '**हिन्दू**' शब्द की उत्पत्ति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि पारसियों के प्राचीन ग्रंथ **वेंदियाद** के प्रथम अध्याय श्लोक सं० १९ में जिन २६ अच्छे माने जाने वाले देशों का नाम दिया गया है उनमें '**हफ्त हिन्द**' (सप्त सैन्धवः) भी है ।

पारसियों के एक अन्य ग्रन्थ में सम्राट गस्तास्प और जरतुश्त की बातचीत में '**बिरहमने व्यास अज हिन्द आमद**' (हिन्दुस्थान देश से व्यास नाम का ब्राह्मण आया) और 'चू' **व्यास हिन्दी बलख आमद गुस्तास्प जरतुस्तरा वाख्वाद**।" (व्यास हिन्दी के बलख पहुँचते ही सम्राट गुस्तास्प ने जरतुस्त को बुलाया।)

व्यास ने अपना परिचय देते हुए स्वाभिमानपूर्वक कहा **'मन मर्दे अम हिन्दी निजाद'** में हिन्द देश से आया हूँ तथा **"बहिन्द बाजगश्त"** फिर हिन्दुस्तान लौट गया।

इस प्रकार इतिहास साक्षी है कि अति प्राचीन काल से हिन्दुस्तान और हिन्दुओं का सम्बन्ध अरब, ईरान, बलोचिस्तान आदि देशों में रहा है। **पंडित सुन्दर लाल कृत 'भारत में अंग्रेजी राज'** भाग १ पृष्ठ ४८ पर इस विषय में अच्छा प्रकाश डाला गया है। वह लिखते हैं—

"भारत के साथ अरबों का घनिष्ठ सम्बन्ध पहले से ही है। भारतीय माल के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और भारतीय विद्याओं का लेन-देन भी शीघ्र ही शुरू हो गया। शुरू के खलीफाओं के दिनों में अनेक हिन्दू बसरा में ऊँचे-ऊँचे पदों पर नियुक्त थे। शाम, काशगर आदि में हिन्दुओं की अनेक बस्तियां थीं। **खुरासान, अफगानिस्तान, सीस्तान और बलोचिस्तान इस्लाम मत स्वीकार करने से पहले या तो बौद्ध थे या हिन्दू। बलख में एक बहुत बड़ा बौद्ध विहार था जिसके बौद्ध मठाधीश अब्बासी खलीफाओं के वजीर हुआ करते थे।**

बौद्ध धर्म की सब मुख्य-मुख्य पुस्तकों के अरबी में अनुवाद किये गये। विशेष कर महात्मा बुद्ध के जीवन और उनके सिद्धान्तों का अरब के मुसलमानों पर बहुत प्रभाव पड़ा। धीरे-धीरे जिज्ञासु अरबों में तरह-तरह के स्वतन्त्र विचार, नये-नये दार्शनिक और सम्प्रदाय पैदा होने शुरू हुए। इस परिस्थिति के अन्दर इस्लाम में अद्वैतवाद और सूफी विचारों का जन्म हुआ।"

एक दूसरे स्थान पर लिखा है—

"मध्य एशिया के दक्षिण में अफगानिस्तान और बलोचिस्तान

और उसके आस-पास के कुछ प्रदेश ईसा से करीब एक हजार साल

पटल
बेलुचिस्तान से लेकर औरंगजेब की मृत्यु तक हिन्दुस्तान, ईरान और ईरान के पश्चिमी देशों के बीच विवाद ग्रस्त भूमि रहा है। भारत के अनेक हिन्दू और मुसलमान सम्राटों ने भारत में बैठ कर सीस्तान, हिरात और अफगानिस्तान पर हुकूमत की है।

डा० राधाकृष्णन के अनुसार—

"हिन्दुत्व किसी जातीय तथ्य पर आधारित नहीं है। हिन्दू जीवन रचना का मूल यद्यपि वैदिक है परन्तु अपने बहुत लम्बे जीवन प्रवाह में अन्य सभ्यताओं संस्कृतियों सामाजिक जीवन से इतना मेल-जोल हुआ कि आज हिन्दुत्व में से वैदिक और अवैदिक तत्वों को अलग-अलग कर पाना कठिन है। **हिन्दू धर्म समन्वय-वादी है। जिन लोगों ने हिन्दू आचार व्यवहार तथा जीवन दर्शन स्वीकार कर लिया हिन्दू धर्म की 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की भावना को स्वीकार कर सहअस्तित्व के आधार पर हिन्दू समाज की हित कामना में लग गये, वह सब हिन्दू हो गये।** रामायण और महाभारत महाकाव्यों में इसी हिन्दुत्व के विस्तार, प्रचार और प्रसार का वर्णन है। **सामाजिक लचक** हिन्दू **धर्म की मुख्य विशेषता रही है। सनातन धर्म मानने का अर्थ स्थिर खड़ा हो जाना नहीं है इसका अर्थ है इसके महत्व-पूर्ण सिद्धान्तो को जान समझ कर वर्तमान संदर्भ और देश काल की परिस्थितियों के अनुसार इन पर अमल करना। प्राचीन समय** के अनेक ईरानी और यूनानी लेखकों ने हिन्दुस्तान की सीमायें अफगानिस्तान और बलाचिस्तान के पश्चिम में बत-लाई हैं और उस सारे पहाड़ी प्रदेश को हिन्दुस्तान का ही अंग माना है ...."

मग ब्राह्मणों के वंशज पारसी

आचार्य वाराहमिहिर ने 'वृहत संहिता' में सूर्य मंदिर के पुजारी पद के लिए मग ब्राह्मणों को ही अधिकारी बताया है। यहाँ पर इस महत्वपूर्ण बात की ओर ध्यान देना आवश्यक है कि आज पारसी कहे जाने वालों के पूर्वजों में ही **'मग ब्राह्मण'** थे। **भविष्य पुराण** के १३९ वें अध्याय में ही मिहिर गोत्रीय सुजिह्व ब्राह्मण की पुत्री **निक्षभा** के गर्भ से सूर्यांशी **जरषष्ट** नामक बालक की उत्पत्ति का कथन वास्तव में पारसियों के महान धर्म प्रवर्तक जरथुस्त्र के विषय में ही है तथा मगों द्वारा जिस 'अव्यंग' नाम मेखला पहने जाने का उल्लेख है वह भी पारसी धर्म ग्रंथ अविस्ता में उल्लिखित अव्योध ही है जिसे आज पारसी लोग कुरती के नाम से जानते है। मिहिर शब्द सूर्य का पर्यायवाची है और मिहिर गोत्रीय ब्राह्मण का उक्त उल्लेख इस प्रदेश में सूर्योपासना के प्रचलन को प्रमाणित करता है। यही नहीं, अवेस्था का **मिथ्र** सूर्यवाची **मित्र** का सहज रुपान्तर है। अवश्य ही ऐशिया के अन्य प्रदेशों तथा विश्व के अन्य देशों में सौर धर्म का प्रचार अधिकांशतः पारस देशीय हिन्दुओं ने ही किया होगा।"

('हिन्दू विश्व' से)

कहा जाता है कि ईरान के मशहूर बादशाह दारा, जिसने ईसा से ५२२ साल पहले से लेकर ४८६ साल पहले तक शासन किया, के विशाल साम्राज्य में उत्तर भारतका कुछ भाग भी शामिल था। किन्तु दारा के शिला लेखों से पता चलता है कि उसका साम्राज्य सिंधु नदी से कभी आगे नहीं बढ़ा।" उस समय तक **'हिन्द'** और **'हिन्दू'** की सर्वत्र ख्याति थी और हिन्दुओं का सांस्कृतिक विस्तार विश्वव्यापी था। हिन्दू धर्म प्रचारक ब्राह्मण या

बौद्ध भिक्षु संसार भर में घूम फिर मानवमात्र के कल्याण हेतु

सनातन धर्म का प्रचार करते थे। आर्थिक दृष्टि से भारत सम्पन्न था तथा ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म, सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से जगत गुरू था। कला कौशल सुख समृद्धि सभी के लिए हिन्दुस्तान की सर्वत्र प्रसिद्धि थी।

पौराणिक युग

पुराणों का कालनिर्णय अभी भी अनुसंधान का विषय है। विद्वानों का मत है कि रामायण, महाभारत, पुराणों, उप-पुराणों की रचना एक विस्तृत काल खण्ड में हुई। पुराणों तथा संस्कृत के अनेक कोशों तथा साहित्य में 'हिन्दू' शब्द की परिभाषा तथा हिन्दू के लक्षणों का उल्लेख मिलता है। दीर्घकाल तक चलने वाली राजनीतिक उठापटक, संस्कृत भाषा तथा हिन्दू सभ्यता व संस्कृति से अनभिज्ञ जनों द्वारा मजहबी तास्सुब तथा राजनीतिक मन्तव्यों को लेकर लिखे गये इतिहास तथा फारसी, अरबी लुगतों को पढ़कर कतिपय बन्धुओं की यह भ्रान्त धारणा बन गई है कि 'हिन्दू शब्द' विदेशी यवनों की देन है और इसका अर्थ हीनभाव युक्त है। विदेशी मुसलमान शासकों द्वारा लिखाए गये इतिहास तथा फारसी, उर्दू लुगतों में इस प्रकार की अर्थ योजना राष्ट्रीय भावनाओं को शिथिल करने का सुनियोजित षडयंत्र था। साम्राज्यवादी कुटिल राजनीतिक शक्तियाँ अपना शासन चिरस्थायी बनाने के लिए इस प्रकार कूटनीति का अवलम्बन करती हैं। यवन साम्राज्यवादियों ने यह किया तो आश्चर्य क्या? किन्तु अपने ही कुछ लोग इस कपट नीति के शिकार बन गए, यह अवश्य चिंता का विषय है।



सुन्दरलाल कृत 'भारत में अंग्रेजी राज' में ठीक ही लिखा है कि—

"संसार के इतिहास में जब-जब और जहाँ-जहाँ एक कौम दूसरी कौम के ऊपर शासन में आई है वहाँ-वहाँ कुदरती तौर पर शासक कौम के लेखकों की गरज अपनी रचनाओं से यही रही कि अपनी कौम के लोगों में देश भक्ति, आत्म विश्वास, स्वाभिमान और साहस को जाग्रत करें और शासित कौम वालों में इन्हीं गुणों को कम करें या पैदा न होने दें।"

उपरोक्त तथ्यों को हृदयंगम कर **'हिन्दू'** शब्द का अर्थ समझना चाहिए। वर्तमान संदर्भ में 'हिन्दू' से अधिक उपयुक्त कोई नाम नहीं हो सकता। यदि **भारतीय** कहें तो केवल भारत की सीमाओं में रहने वाला व्यक्ति मात्र का बोध **होता है जब कि अन्य देशों में भी बड़ी संख्या में 'हिन्दू' रहते हैं। पड़ोसी नैपाल घोषित 'हिन्दू राष्ट्र है। लगभग ३ करोड़ हिन्दू भारत के बाहर अन्य देशों में रहते हैं। यदि 'आर्य' कहें तो फिर उत्तर पूर्वी सीमा पर रहने वाले बन्धु जो मंगोलाइड ट्राइब से अधिक मेल खाते हैं या दक्षिण के निवासी द्रविड़ों का सामाञ्जस्य नहीं हो पाता। अतः ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक सब प्रकार का ध्यान रखते हुए अतीतकाल से प्रचलित तथा सर्व परिचित लोकप्रिय 'हिन्दू' ही अपने लिए गौरव का नाम है।**

—: ० :—

प्राचीन शास्त्र, कोश, पुराणादि साहित्य में 'हिन्दू'

क– **हिमालयात समारभ्य यावद इन्दु सरोवरम्।**
तद्देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।
हिमालय से इन्दु सरोवर तक विस्तृत देव निर्मित देश का नाम हिन्दुस्थान है। (बार्हस्पत्यशास्त्र)

ख– **जानुस्थाने जैनुशब्दः सप्तसिन्धुस्तथैव च।**
हफ्त हिन्दुर्यावनीय पुनर्ज्ञेया गुरुण्डका॥
सकारोपलक्षित सप्तसिधु का यूनान आदि देशों में हकारोपलक्षित अपर रूप 'हफ्त हिन्दू' प्रचलित होगा।
(भविष्य पुराण)

ग– **हिनस्ति तपसा पापान् दैहिकान दुष्टमानसान्।**
हेतिभिः शत्रुवर्गश्च स हिन्दुरभिधीयते॥
जो अपने दैहिक और मानसिक पापों को तपश्चर्या द्वारा विनाश करे और शत्रुओं का नाश करे वह 'हिन्दू' है।
(परिजातहरण नाटक)

घ– **हिंसया दूयेत यस्माद हिन्दुरित्यभिधीयते।**
हिंसक कार्यों से घृणा करने वाले को **'हिन्दू'** कहते हैं

ङ– **हीनं दूषयति इति हिन्दुः जाति विशेषः।**
हीन कर्म का त्याग करने वाले को 'हिन्दू' कहते हैं।"
(शब्द कल्पद्रुम)

च– **हिन्दु हिन्दूश्च संसिद्धौ दुष्टानां च विघर्षणे**
(अदभुत कोषश)

छ– **हिंसया दूयतयश्च सदाचरण तत्परः।**
वेद-गो-प्रतिमा-सेवी स हिन्दू मुख वर्णभाक॥
(वृद्ध स्मृति)

ज– ॐ कार मूल मन्त्राढयः पुनर्जन्म दृढ़ाशयः ।
गोभक्तो भारत गुरु हिन्दु हीनत्व दूषकः ॥
(पं० माधवाचार्य शास्त्री)

झ– हिन्दुः हिन्दुश्च हिन्दवः ।
हिन्दु-हिन्दू और हिन्दुत्व तीनों एकार्थक हैं। (मोदिनी कोश)

ञ– हिनोति सर्वदूषाणि दुनोत्यन्याय पद्धतिम् ।
सर्वभूतरतो यस्तु सः हिन्दुः परिकीर्तितः ॥
जो सब दोषों को दूर करता है और अन्याय मार्ग पर चलने से रोकता है तथा जो प्राणि मात्र के कल्याण की कामना करता है वह हिन्दू है ।

ज– हिनस्ति दुष्टान् दुरितानि च यः स हिन्दुः ।
जो दुष्टों का हनन करता है और दुराचारों का दलन करता है वह हिन्दू है । (अज्ञात)

महाभारत शान्ति पर्व के अनुसार सनातन धर्म की व्याख्या इस प्रकार की गई है :—

सत्यं दानस्तपः शौच संतोषो ह्रीः क्षमार्जवं,
ज्ञानं शमोदया ध्यानमेष धर्मः सनातनः ॥
अद्रोहः सर्व भूतेषु कर्मणा मनसा गिरा,
अनुग्रहश्च दानं च सतोधर्मः सनातनः ॥

'हिन्द' या 'हिन्दू' नाम अरबों का आविष्कार नहीं है ।

संस्कृत भाषा में 'सरितो हरितो भवति, सरस्वत्यो हरह्वत्यः' नियम के अनुसार 'स' का उच्चारण 'ह' हो जाता है, उसी प्रकार पारसियों के ग्रन्थ 'अवेस्ता' के भी व्याकरण में 'स' के स्थान पर 'ह' होने का नियम प्राप्त होता है । प्रान्त भेद से भी 'स' की जगह 'ह' बोलने का नियम अपने ही देश में है । गुजरात के गाँव की बोली में शक्कर को हक्कर कहते हैं । अरबी भाषा में इस प्रकार

का कोई नियम नहीं है। अरबी लिपि में 'स' उच्चारण वाले, सीन, स्वाद, कई अक्षर हैं। अतः वेदों में प्रयुक्त 'सप्त सिन्धु' या महाभारत के 'सिन्धु' देश से 'हफ्त हिन्दु' या 'हिन्दु' शब्द बना तो यह संस्कृत या अवेस्ता भाषा भाषियों द्वारा ही सद्भावनापूर्वक बनाया गया है।

प्राचीन सिंधु सभ्यता और लिपि के विशेषज्ञ डा० फतेह सिंह के अनुसार हड़प्पा और मोहनजोदड़ो लिपि में भी 'हिन्धु' (हिन्दू) आया है। उनका मत है कि हिमालय की हिम को गलाकर जैसे सिन्धु बहती है इसी प्रकार हिम रूपी जड़ता का विनाश कर जो सतत गतिशील रहता है वह 'हिन्दू' है।

हिमं धुनोति इति हिन्दू।

'हिन्दू' की परिभाषा अर्वाचीन संदर्भ ग्रंथों में

हिन्दः Also हिन्दू

English Sanskrit Dictionary P. III.

Prasad Prakashan—Poona.

Name of the People of Hindustan or Bharatvarsha. The name appears to have been derived from Sindhu, the name of the celebrated river where the Vedic Aryans recited their Vedic Mantras.

In the Avesta 'स' is pronounced as 'ह' so सप्तसिंधु was pronounced by the Persians as 'हप्तहिन्दु' the Bhavishya Puran speaks of 'हप्तहिन्दु' Here are a few references takeu from Kosas and the Puranas :—

Kalika Puran says :—

(१) "कालिना बलिना ननम् धर्मांकलिते कलौ।
यवनर्घोरमाक्रान्ता हिन्दवो विन्ध्यमाविशन् ॥"

१ (धर्महीन कलियुग में बलवान कलि और यवनों द्वारा अत्यधिक आक्रान्त होकर हिन्दू विन्ध्य में प्रविष्ट हो गये।)

The Meru Tantra of the 8th Century A. D. says :—

(२) "हिन्दु धर्म प्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्तिनः।
हीनं च दूषयत्येष हिन्दूरित्युच्यते प्रिये॥"

२ (हे प्रिये! हिन्दू धर्म को प्रलुप्त करने वाले चक्रवर्ती उत्पन्न हो रहे हैं तथा जो हीन (हीनता) को दूषित करता है, वह हिन्दू कहा जाता है।)

The Rama Kosha :—

(३) "हिन्दुर्दूष्टो न भवति नानार्यो न विदूषकः।
सद्धर्म-पालको विद्वान् श्रौत धर्म परायणः।"

The Hemant Kosha :—

(हिन्दू न दुष्ट होता है न अनार्य होता है और न विदूषक होता है। वह सद्धर्म पालक, विद्वान् और वैदिक धर्म में निरन्तर रहता है।)

(४) "हिन्दुर्हि नारायणादि देवता भक्तः।"

(हिन्दू नारायणादि देवों का भक्त होता है।)

जेम्स हेस्टिंग्स कृत 'इन्साइक्लोपीडिया आफ रेलीजन्स एण्ड एथिक्स'

पृष्ठ सं० ३८६ पर 'हिन्दू' शब्द की प्राचीनता बताते हुए लिखा हैं "ईसा से ४८६ वर्ष पूर्व हुए दारा हस्तास्प के स्मारक शिला लेख में 'हिन्द का नाम 'हिन्दुस' HINDUS रूप में उल्लिखित पाया जाता है।

यह शिला स्मारक ईरान में पर्सीपोलिस नगर के निकट है?

हिन्दी शब्द सागर भाग (४)

(काशी नगरी प्रचारिणी सभा)

हिन्द—यह शब्द वास्तव में सिंधु शब्द का फारसी उच्चारण है। प्राचीन काल में भारतीय आर्यों और पारसिक आर्यों के बीच बहुत कुछ सम्बन्ध था। याचक यज्ञ करानेवाले बराबर एक देश से दूसरे देश में जाया करते थे। शाक द्वीप के '**मग ब्राह्मण**' फारस के पूर्वोत्तर भाग से ही आए हैं। ईसा से ५०० वर्ष पहले दारा प्रथम के समय में सिंधुनद के आसपास पारसियों का अधिकार हो गया था। प्राचीन 'पारसी भाषा में '**स**' का उच्चारण '**ह**' होता था। जैसे संस्कृत का '**सप्त**' फारसी का '**हप्त**' बन गया। इसी नियम के अनुसार '**सिंधु**' का उच्चारण प्राचीन पारस देश में '**हिंदू**' या हिंद होता था। पारसियों के धर्म ग्रंथ '**अवेस्ता**' में **हप्तहिन्द**' का उल्लेख है, जो वेदों में '**सप्तसिंधु**' नाम से आया है। धीरे-धीरे '**हिन्दु**' शब्द सारे देश के लिए प्रयुक्त होने लगा। प्राचीन युनानी जब फारस आये, तब उन्हें देश का परिचय हुआ, और वे अपने उच्चारण के अनुसार फारसी **हिंद**' को '**इन्ड**' कहने लगे जिससे आज कल '**इण्डिया**' शब्द बना है।

हिन्दू—भारत में बसने वाली आर्य जाति के वंसज जो भारत में प्रवर्तित या पल्लवित आर्य धर्म, संस्कार और समाज व्यवस्था को मानते चले आ रहे हैं। वेद, स्मृति, पुराण आदि अथवा इनमें से किसी एक के अनुसार चलने वाला भारतीय आर्य धर्म का अनुयायी।

यह नाम प्राचीन पारसियों का दिया हुआ है जो उनके द्वारा संसार में सर्वत्र प्रचलित हुआ। प्राचीन भारतीय आर्य अपनी धर्म व्यवस्था को 'वर्णाश्रम धर्म' के नाम से पुकारते थे। प्राचीन

अनार्य द्रविड़ जातियों को उन्होंने अपने समाज में मिलाया पर उन्हें अपनी व्यवस्था के भीतर करके अर्थात् सिद्धांत रूप में किसी आर्य ऋषि, राजा इत्यादि की संतति मानकर। पीछे शक, हूण, यवन आदि भी जो मिले वे या वशिष्ठ ऋषि द्वारा उत्पन्न (गाय से सही) वीरों के वंशज माने जाकर अथवा ब्राह्मणों के दर्शन न होने से पतित क्षत्रिय माने जाकर। सारांश यह है कि भारतीय आर्य अपनी धर्म व्यवस्था को मजहब की तरह फैलाते नहीं थे। आस पास आई हुई जातियाँ उसे सभ्यता के संस्कार के रूप में आप से आप ग्रहण करती थीं। प्राचीन काल में आर्य सभ्यता के दो केन्द्र थे। भारत और पारस। इन दोनों में भेद बहुत कम था। **हूणों ने पहले पारसी सभ्यता ग्रहण की, फिर भारत में आकर वे भारतीय आर्यों में मिले। शक जाति तो आर्य जाति की ही एक शाखा थी। पीछे जब पारस निवासी मुसलमान हो गये तब उन्होंने 'हिन्दू' शब्द के साथ 'काफिर', 'काला', 'लुटेरा' आदि कुत्सित अर्थों की शब्द योजना की। जब तक वे आर्य धर्म के अनुयायी रहे तब तक 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग आदर के साथ 'हिन्द निवासी' के अर्थ में ही करते थे। यह शब्द इस्लाम के प्रचार के बहुत पहले का है। अतः पीछे से मुसलमानों के बुरे अर्थ योजना करने से यह शब्द बुरा नहीं हो सकता।**

हिन्दी विश्व कोश

(नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)

● ऋग्वेद ८, २४, २७ में **सप्तसिंधवः** (आवेस्ता हफ्त हिन्दू) शब्द देश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वैदिक वाङ्मय में 'स' के

स्थान पर 'ह' का अनेकत्र विकास पाया जाता है। 'हरितो

नरंह्याः' अथर्ववेद २०, ३०, ४। इसकी व्याख्या में निघंटु कहता है :—

सरितो हरितो भवति, सरस्वत्यो हरहवत्यः (१, १३) अर्थात् प्रस्तुत हरित शब्द को उच्चारण भेद के कारण नदी वाचक सरित शब्द समझना चाहिए और इसी प्रकार **'सरस्वती'** का विकास **'हरहवती,** ज्ञेय है। यह वैदिक परिपाटी लोक में आज भी देश भेद से सर्वत्र प्रचलित है। **(इसी नियम से सप्तसिंधवः से 'हफ्त हिंदवः' तथा 'हिन्द' और 'हिन्दू' का विकास हुआ)**

ईरानदेशीय पारसी संप्रदाय के मान्य ग्रंथ **शातीर** की १६२ वीं आयात में भारत देश का नाम हिंदू (हिंद) रूप से प्रतिपादित है। इसी पुस्तक की १६३वीं आयत से प्रमाणित होता है कि **उस समय 'हिंद' (हिंदू) देश के निवासी को हिंदी कहा जाता था जैसे 'चूंन्यास हिंदी बल्ख आमद'। सिन्ध (सिंधु) प्रान्त के निवासियों को भी आज लोग सिंधी कहते हैं 'सिंधु' नहीं। मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लेने के बाद पारस निवासियों ने** ने हिन्दू' शब्द के साथ काफिर, काला, लुटेरा, गुलाम इत्यादि अर्थों की योजना की।

तातस्थ्य **लक्षणया 'हिंदू' शब्द, हिंदू देश 'भारत' के निवासी अर्थ में** भी **प्रयुक्त होता रहा है, वह निवासी चाहे किसी भी जाति का क्यों न** हो। मौ० **जलालुद्दीनरूमी 'वहरुल उलूम'** (मसनवी मौलाना रूम) पुस्तक के 'दफ्तर दोयम' में हिंदू देश भारत के निवासी मुसलमानों को हिंदू नाम से ही पुकारते हैं

चार हिंदू दर यके मस्जिद रवंद, बहरे ताअत रा के वो साजिद शुवंद।

इसका आशय है कि चार हिन्दू यानी हिन्दुस्तानी मुसलमान एक मस्जिद में गए और इबादत के निमित्त सिजदा करने लगे। (मसनवी मौ० रूम पृ० १६७, मुं० नवल किशोर प्रेस, लख० १८६६ ई०)

इस्लाम धर्म की तुलना में भारतीय धर्म, 'हिंदू धर्म' के नाम से सम्बोधित होने लगा और पहले की अपेक्षा हिंदू की व्यापकता कम हो गई। दाह किए जाने वाले ही 'हिन्दू' माने जाने लगे— 'हिन्दू दाह, यवन ईसाई दफन इसी में पाते हैं'। हिन्दू के साथ धर्म शब्द के जोड़े जाने के कारण 'हिन्दू' की परिधि दिनानुदिन संकुचित होती चली गई। हर फिर्का अपने को स्वयं में सीमित समझने लगा। **'आर्य समाज'** ने **'हिंदू'** शब्द का बहिष्कार किया और उसके स्थान पर **'आर्य'** शब्द की, प्रतिस्थापना की। हिन्दी भाषा का नाम आर्य भाषा किया। हिंदू (धर्म) को ब्राह्मण समझ लिए जाने के कारण बौद्ध और जैन भी अपने को हिन्दू कहने से मुकरने लगे। शेष भारतीय भी अपने को प्रथमतः हिंदू न कहकर वैष्णव, शैव, शाक्त, सिक्ख आदि बताने लगे।

मुस्लिम जाति की तुलना में उनसे पूर्ववर्ती भारतीयों को हिंदू जाति का बताया जाने लगा। वस्तुतः यह भी एक प्रकार का अध्यारोप था। हिंदु नामक कोई भी जाति नहीं थी, अपितु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आदि जातियाँ गणनीय हैं। हिंदू नामक न तो कोई ग्रन्थ था और न कोई मत ही।

निष्कर्षतः 'हिन्द' या 'हिन्दू' वृहत्तर भारत देश की संज्ञा थी फलतः इस देश के निवासी भी हिंदू कहलाने लगे।

हिंदी विश्वकोश न० प्र० स०

बाबर ने अपनी आत्म कथा (**बाबरनामा**) में लिखा है कि कलात में इसकी सेना को वहां व्यापार करने गये बड़ी संख्या में हिन्दू या हिन्दुस्थानी व्यापारी मिले थे। स्वयं इसके एक प्रमुख सेनापति का नाम 'हिन्दू बेग' था।

The wonder that was India P. 48

by A. L. Basham Prof. of Asian Civilization National University Canberra

At this time (558-530 B. c.) the city of Taksasila in North West was already centre of learning and trade. Young men from Magadh were sent there to finish their education and Bimbsara was in diplomatic contact with Puskara Sarin, King of Gandhar, whose Kingdom probably included Taksasila. In an inscription of about 519 B.C. Darius 1 the third of the Achaemenid Emperors (Empire of Persia) claims possession of Gandhar and in a slightly later inscription he also claims HINDUSH or India which according to Herodotus became the 12 th. Satrapy of the Persian Empire. The extent of Persian province of HINDUSH is not certain but it probably included too much of the Punjab.

हिंदू सभ्यता का विकास लेखक-चिरंजीलाल पराशर

"सिन्धु का सम्बंध अरब देशों तथा बिलोचिस्तान, ईरान आदि से रहा है। × × × ईरानियों के यहां 'सिन्धु' का वर्णन है क्योंकि उस समय आर्यों की बस्तियां सिन्धु से ईरान तक फैली हुई थीं। अतः ईरानी ही **'सिंधु को हिन्दू'** कहते थे। वह लोग सिंधु के पूर्वी तट पर बसने वालों को **पूर्वी हिन्दू'** और अपने को **'पश्चिमी हिन्दु'** कहते थे। उनके **'वेस्त'** नामक ग्रन्थ में लिखा है

कि "**मिथ्** के लम्बे हाथ उनको पकड़ लेते हैं जो उसको धोखा देते हैं। जब **पूर्वी हिंदू** में होते हैं तो मिथ् उनको पकड़ लेता है। और जब पश्चिमी **हिन्द** में होते हैं तो उन्हें मार डालता है।" इसी प्रकार '**सरओस**' की प्रशंसा करते हुए कहा गया है "**जब पूर्वी हिंद में हो तब भी वह अपने** दुश्मन को पकड़ लेता है और जब **पश्चिमी हिन्द** मे हो तब भी उसे मार डालता है।

सप्त सिंधु (पुराण परिशीलन पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी)

× × ×

इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचता परुष्ण्या
दृ/ असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये ऋणोह्या सुषोमया ॥
(ऋ०)

इस मन्त्र में गंगा यमुना सरस्वती, शुतुद्रि, मरुद्वृधा, अर्जीकीया और सुषोमा इन सात नदियों का उल्लेख है। इस मन्त्र की परुष्णी ऐरावती है तथा अक्सिनी चन्द्रभागा और वितस्ता झेलम है। इन तीनों को मिलाकर मालव देश में दक्षिणाभिमुख बहने वाली 'मरुद्वृधा' बनती है। ये नदियां जिस प्रदेश में बहती हैं वह '**सप्त सिंधु**' कहलाता है। सप्त सिन्धु का 'सिन्धु' शब्द सिन्धु नदी का वाचक नहीं अपितु नदी सामान्य का वाचक है।

जिस प्रकार इस ऋचा की सात नदियां सिन्धु के इस पार **सप्त सिंधु प्रदेश बनाती** हैं उसी प्रकार सिन्धु के उत्तर पार में स्थित सात **नदियों से उस पार का सप्त सिंधु प्रदेश बनता था आदि**।

चन्द बरदाई लिखित पृथीराज रासो

चन्दवरदायी के पिता बेन कवि ने सम्राट पृथ्वीराज के पिता की प्रशस्ति में लिखा था—

अटल ठाठ महिपाल अटल तारागढ़ अस्थानम् ।
अटल नग्र अजमेर अटल हिन्दव अस्थानम् ॥

शहाबुद्दीन गोरी को बन्दी बनाकर रखने की घटना का उल्लेख करते हुए चन्दवरदाई ने लिखा है--

राखि पांच दिन साहि अदब आदर बहु किन्नो,
सुजहहुसेन गाजी सपूत हत्थे ग्रहि दिन्नो,
किय सलाम तिन बार जाहु अपन्ने सुथानह,
मति हिन्दु पर साज्जि सज्जि आवो थानह ॥

अर्थात् सम्राट पृथ्वीराज ने पांच दिनों तक शहाबुद्दीन को बंदी बनाकर बहुत आदर के साथ रखा फिर शुजाहुसेन गाजी के पुत्र की मारफत संदेश दिया कि तीन बार सलाम कर अपने देश को लौट जाये और फिर कभी फौज बटोर कर हिन्दुओं पर चढ़ाई करने का साहस न करे।

बारह बार शहाबुद्दीन गोरी को परास्त कर उसे क्षमादान करने वाले पृथ्वीराज तेरहवें आक्रमण में जयचन्द के द्रोह के कारण परास्त होकर स्वयं बन्दी बन गए। क्रूर हृदय गोरी ने उन्हें गजनी ले जाकर नाना प्रकार की यातनायें दीं, यहाँ तक कि दोनों आँखें निकलवा कर अंधा बना दिया। चन्द बरदायी भी गजनी गये और उन्होंने सम्राट को मुक्त कराने का कोई उपाय न देख कर एहसान फरामोश गोरी को उसके ही घर में मारने की योजना बनाई। शब्द बेधी वाण विद्या के प्रदर्शन हेतु जब पृथ्वीराज को दरबार में लाया गया और धनुष वाण हाथों में दिया गया तो उन्होंने चन्द बरदायी से सुल्तान की स्थिति का संकेत पाकर एक ही अचूक बाण से सुल्तान को मार दिया।

चंद बरदायी लिखित **पृथ्वीराज रासो** में हिन्द, हिन्दू शब्द का अनेक बार उल्लेख आया है--

धन हिन्दु पृथिराज जिने रजवट्ट उजारिय,
धन हिन्दु पृथिराज बीच कलिमज्झ उजारिय,
धन हिन्दु पृशिराज जिन सचिहान ह्वै संध्यो,
बारह बार ग्रहि–अंत समय सरविंध्यो ॥

हिन्दूपति महाराणा प्रताप

इसी प्रकार महाराणा प्रताप को बीकानेर नरेश पृथ्वीराज ने जो प्रेरणादायी पत्र लिखा था उसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार थीं–

**अकबर समुद्र अथाह, तिह डूबा हिन्दू तुरक।
मेवाड़ों तिन मांहि, पोयण फूल प्रताप सी ॥ १ ॥
अकबर घोर अन्धार, अंधाणा हिन्दू अबर।
जागे जग दातार, पोहरे राण प्रताप सी ॥ २ ॥
'हिन्दू पति' परताप ! पत राखो हिन्दूवाण की।
सहे विपति संताप, सत्य सपथ कर आपणी ॥ ३ ॥**

महाराणा प्रताप ने उत्तर देते हुए लिखा

**तुरक कहसि मुख हिन्दवो इणतन सू इकलिंग।
ऊगे जाही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ॥**

अर्थात् मैं अपने कुल देवता श्री एकलिंग महादेव की शपथ पूर्वक कहता हूँ कि हिन्दू के मुख से अब भी अकबर को 'तुरक' ही कहा जायगा 'शाह' नहीं। सूर्य ठीक उसी पूरब दिशा में उगेगा जिसमें कि सदैव उगता आया है।

शिवा जी का पत्र जय सिंह को—

मूल मराठी पत्र का हिन्दी रुपान्तरण

"तुम जितने किले चाहो उतने ही तुम्हें दे सकता हूँ, स्वयं अपने हाथों तुम्हारा ध्वज किलों पर चढ़ा दूंगा। परन्तु

मुसलमान को यश नहीं दिया जा सकता। मैं और तुम दोनों ही हिन्दू हैं, राजपूत हैं, हिन्दू का राज्य किसी हिन्दू के पास रहे, इसमें हानि नहीं। हिन्दू धर्म के रक्षक को सौ सौ बार नमस्कार करने को प्रस्तुत हूँ। परन्तु हिन्दू धर्म की मान हानि हो, यह कभी सहन नहीं हो सकता।"

शिवाजी की प्रशस्ति में कवि भूषण ने लिखा है—

राखी हिन्दुवानी हिन्दवान को तिलक राख्यो,
स्मृति औ पुराण राख्यौ वेद विधि दूनो में।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की।
कांधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।

यदि 'हिन्दू' नाम अपमानजनक संज्ञा होती या उर्दू-फारसी लुगतों के अनुसार उसका अर्थ गाली होता तो चन्द बरदायी आदि विद्वान उसका ससम्मान प्रयोग अपनी कविता में कैसे करते? इससे ही समझना चाहिये कि मुसलमान लेखकों द्वारा 'हिन्दू' की अपशब्द अर्थ योजना मजहबी तास्सुब और राष्ट्रीय मनोबल को कम करने के उद्देश्य से की गयी थी।

'हिन्दू' नाम की प्राचीनता का प्रमाण ग्रीक इतिहास में भी पाया जाता है। अलिक्सुन्दर (Alexander) के भी बहुत पहले से भारत के लिए 'इन्दु' (Indu) या इन्डो (Indo) नाम का उल्लेख ग्रीक इतिहासकारों ने किया है।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप सिंह, गुरु नानक देव, गुरु गोविन्द सिंह, छत्रपति शिवाजी आदि वीर महापुरुष, जिन्होंने विदेशी आक्रमणकारी मुसलमानों से सतत् संग्राम किया, सब हिन्दुत्व का अभिमान रखते थे।

देश काल की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप हिंदुत्व के पूर्वोक्त गुणों को परिलक्षित कर स्वा० दयानन्द, लोकमान्य तिलक, वीर सावरकर, स्वामी विवेकानन्द, महामना मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, श्री गुरूजी आदि 'महापुरुषों' ने 'हिन्दू' नाम की व्याख्या की है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती



हिन्दू धर्म समुद्र के समान है। जैसे उसमें असंख्य लहरें उठती हैं यही दशा इसकी है, इसमें ऐसे लोग भी हैं जो पानी छानकर पीते हैं ताकि कोई अदृश्य जीव उनके उदर में न चला जाय। ऐसे लोग भी हैं जो दुग्धाहारी है केवल दूध ही पीते हैं अन्य कोई वस्तु नहीं खाते पीते और ऐसे लोग भी इसी में हैं जो वाम मार्गी कहलाते हैं जो पवित्र अपवित्र का बिचार किये बिना जो कुछ पाते हैं खा जाते हैं। इसमें ऐसे लोग भी हैं जो आयुकर यति रहते हैं न तो किसी स्त्री से विवाह करते हैं और न किसी को बुरी दृष्टि से देखते हैं और इसके विपरीत लोग भी हैं।

एक वह भी हैं जो केवल निराकार परमात्मा की उपासना करते हैं और एक वे भी हैं जो अवतारों को पूजते हैं। एक वे हैं जो केवल ज्ञानी हैं और एक वे हैं जो केवल ध्यानी हैं। इसमें वे लोग भी हैं जो छुआछूत का इतना बचाव करते है कि अन्य धर्मी तो एक और शूद्रों के हाथ से न पानी पीते हैं और न उनके हाथ का बना भोजन करते हैं और वे लोग भी इसी में हैं जो शूद्रों

के हाथ से पानी भी पीते हैं और उनसे भोजन भी बनवाकर खाते हैं। इन सब बातों के होते हुए भो कोई इनका हिन्दू धर्म से वहिष्कार नहीं करता। अतः समझना चाहिये कि हिन्दू धर्म बहुत पक्का है कच्चा नहीं। × × ×—हम केवल यह चाहते हैं कि लोग शुभ गुणों को ग्रहण करें और अवगुणों को त्याग दें।

(शाश्वत---वाणी अक्तूबर १९६८)

लोकमान्य तिलक



लो० तिलक ने वेदों को प्रमाण मानना, साम्प्रदायिक विभिन्न नियमों का पालन करना, अनेक उपास्य देवों में से आस्थानुरूप किसी देवता में भक्ति रखना, यह हिन्दू के लक्षण कहे हैं।

प्रामाण्य बुद्धिर्वेदेषु, साधनानामनेकता,
उपास्यानामनियमो हिन्दू धर्मस्य लक्षणम् ॥

× × × ×

वीर सावरकर

आसिन्धु सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
पितृभूःपुण्यभूश्चैव सर्वे हिन्दूरिति स्मृता॥



अर्थात् सिन्धु से सिन्धु पर्यन्त भारत भूमि को जो मातृभूमि और पुण्य-भूमि, मानता है वह 'हिन्दू' है।

इनके अनुसार "हिन्दू, और 'हिन्दुस्थान' यह शब्द विदेशी न होकर हमारे अपने ही हैं। इसके सम्मान के रक्षणार्थ हमारे हजारों हुतात्माओं ने संघर्ष किया है, प्राणों का उत्सर्ग किया है किन्तु इस 'हिन्दू' नाम का परित्याग नहीं किया। परन्तु इस शब्द की उत्पत्ति के विषय में अत्यन्त असत्य और अपमानास्पद जानकारी मुसलमान, अंग्रेज इत्यादि परकीय लेखकों की किताबों में लिखी है। उसके प्रभाव से प्रभावित स्वीकीयों ने भी ऐसे हो बिचार अपने ग्रन्थों में लिख दिये। इन ग्रन्थों को पढ़कर यह गलत जानकारी अपने देशवा-सियों के मस्तिष्क में इस प्रकार घर कर गई कि आज भी निकाले नहीं निकलती।"

"ऋग्वेद में हमारे राष्ट्र के लिए 'सप्त सिन्धु' नाम प्रयुक्त

किया गया है। इसमें भी विशेष यह है कि यह नाम जाति वाचक,

धर्म वाचक या पंथवाचक नहीं है। जाति वाचक 'आर्य' या धर्म वाचक 'वैदिक' इन नामों से अपने जनों का हम स्वयं ही उल्लेख करते थे। किन्तु 'सप्त सिन्धवः' शब्द का उल्लेख देश मूलक, भौतिक और राष्ट्रीय अर्थ में ही हैं। वैदिक काल में प्रसिद्ध नदियों के बीच में बसने वाले जन-आर्य, अनार्य, दास, वैदिक, व्रात्य-इन सभी भेदा-भेदों का प्रगट विचार या गणना न करते हुए, उन सब का मिलकर जो एक जनपद या एक राष्ट्र उन सात नदियों के प्रदेश में बसता था उस राष्ट्र को ऋग्वेद काल में स्वयं हमहीं 'सप्त सिन्धु', कहा करते थे। हमारे देश के राष्ट्र के स्वयं हमारे द्वारा रखे हुये प्राचीनतम नामों में से 'सप्त सिन्धुः' भी एक नाम है। इसी सप्त सिन्धु शब्द से उसका आज का विकृत रूप प्राकृत भाषा में 'हिन्दू' शब्द बना है। (सावरकर विचार दर्शन)

स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू की व्याख्या करते हुए कहा है कि—"हिन्दू सम्प्रदाय का प्रतीक नहीं वरन् उदार व्यापक शब्द है। हिन्दू शब्द के अन्तर्गत भारत की समस्त संस्कृति, सभ्यता, मानव विकास, इतिहास, एवं भारतीय पंथों और मत-मतान्तरों का समावेश हो जाता है। हिन्दू शब्द ओर छोर हीन सागर तुल्य है जिसमें समस्त नदियां विभिन्न नामों के साथ जल लाती हैं और उसमें मिलकर एकाकार हो जाती हैं।"

स्वामी विवेमनन्द

महामना पं० मदन मोहन मालवीय

महामना पं० मदन मोहन मालवीय ने हिन्दू धर्म को सर्वभूत हितेरतः बताते हुए उसके संरक्षण, प्रचार एवं प्रसार का हृदय से आग्रह किया है। उन्होंने अपने भाव व्यक्त करते हुए निम्नलिखित श्लोक मंत्र रूप में दिये हैं।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

सत् सिद्धान्त सनातनः

ईश्वरैक्यं पुनर्जन्म पुरुषार्थैक निष्ठता।
साधनानामनेकत्वं सर्वभूत हितेच्छता॥

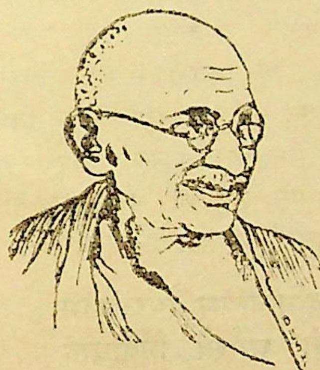
भारतीयर्षि सम्प्रोक्ता सत्सिद्धान्तः सनातना॥
पंचवैते समासेन ज्ञातव्या विश्वमंगला॥

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

हिताय सर्व लोकानां निग्रहाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय प्रणम्य परमेश्वरम्॥ १॥
ग्रामे ग्रामे सभाकार्या ग्रामे ग्रामे कथा शुभा।
पाठशाला मल्लशाला प्रति पर्व महोत्सवः॥२॥
अनाथाः विधवाः रक्ष्याः मन्दिराणि तथा च गो।
धर्म्यं संगटनं कृत्वा देयं दान च तद्धितम्॥ ३॥
अभयं सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं धृतिःक्षमा।
सेव्यं सदाऽमृतमिव स्त्रीभिश्च पुरुषैस्तथा॥४॥
कर्मणां फलमस्तीति विस्मर्तव्यं न जातु चित।
भवेत्पुनः पुनर्जन्म मोक्षस्तदनुसारतः॥५॥

सनातनीयाः समाजाः सिक्खाः जैनाश्चसौगताः ।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरताः भावयेयुः परस्परम् ॥६॥
विश्वासे दृढ़ता स्वीये परनिन्दा विवर्जनम् ।
तितिक्षा मतभेदेषु प्राणिमात्रेषु मित्रता ॥७॥
श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम् ।
'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥८।
उत्तमः सर्वधर्माणां हिन्दु धर्मोऽयमुच्यते ।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्व लोक हितैषिभिः ॥६॥

महात्मा गांधी



"यदि मुझसे हिन्दू धर्म की परिभाषा पूँछी जाय तो मैं कहूँगा कि **शान्तिमय उपायों से सतत् सत्यान्वेषण ही 'हिन्दुत्व' है।** ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार करने वाला भी हिन्दू हो सकता है। हिन्दुत्व **की** गति में आज अवरोध उत्पन्न हो गया है, अकर्मण्यता आ गई है, उसका विकास मन्द हो गया है तो उसका एकमेव कारण युगों युगों से कार्यरत रहने की थकान है यह विश्राम काल समाप्त होगा और 'हिन्दुत्व' पहले से भी अधिक अपनी अलौकिक आभा प्रसारित कर विश्व पर छा जायगा।"

संसार के सभी धर्मों में हिन्दू धर्म अधिक सहिष्णु है तथा उसकी भावना सर्वस्पर्शी है।

"हिन्दू धर्म एक जीवित धर्म है। गंगा के प्रवाह के समान वह मूल में शुद्ध है। मार्ग में उस पर मैल चढ़ती है। इसके बावजूद जिस प्रकार गंगा की प्रवृत्ति अन्त में पोषक है, उसी प्रकार हिन्दू धर्म है। वह प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय स्वरूप ग्रहण करता है, फिर भी उसमें एकता होती है। रूढ़ियाँ धर्म नहीं हैं। रूढ़ियों में परिवर्तन होता है लेकिन धर्म सूत्र यथावत् बने रहेंगे।"

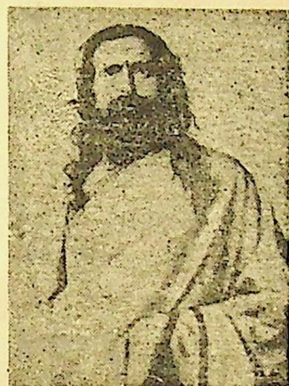
"मेरे विचार से हिन्दू धर्म इतना विशाल है कि वह पृथ्वी की चारों दिशाओं के पैगम्बरों के उपदेशों के प्रति सहिष्णुता रखता है; इतना ही नहीं बल्कि उन्हें आत्मसात कर सकता है। हिन्दू धर्म में अधिक से अधिक विकास पाने का मौका देने की संभावना है, और कठोर से कठोर अन्तरात्मा को, गहरे से गहरे विचारक को और पवित्र-से-पवित्र हृदय को संतोष देने की क्षमता है।……मेरी कल्पना का हिन्दू धर्म एक महान सतत् विकास का प्रतीक और काल की तरह सनातन है। उसमें जरथुस्त, मूसा, ईसा, मुहम्मद, नानक और ऐसे कई धर्म संस्थापकों के उपदेशों का समावेश हो जाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार की गई है—

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यम् द्वैषरागिभिः।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधतः॥

अर्थात् जिस धर्म को राग द्वेष विहीन ज्ञानी संतों और दिव्यशील महात्माओं ने अपनाया है और जिसे हमारा हृदय और बुद्धि भी स्वीकार करती है, वही 'धर्म' है। मैं धार्मिक व्यक्ति हूँ। राजनीति में इसलिए पड़ा हूँ कि वह भी धर्म का एक अंग है। धर्म की परिधि के बाहर कुछ भी नहीं।"

'हिन्दू' हमारे लिए सम्पूर्ण विश्व के द्वारा स्वीकृत एक आदर का नाम है।

श्री गुरूजी



"हम हिन्दुओं ने परमात्मा को अपने सम्पूर्ण अस्तित्व का आधार माना है. इसीलिए यह संभव है कि हिन्दू समाज का विकास सर्व समावेशक ढंग से हुआ है जिसमें अवस्थाओं एवं आकारों की आश्चर्यजनक विविधता है, किन्तु विपुल भावव्यंजनाओं एवं अभि-व्यक्तियों में एक अन्तर्जात एकता का सूत्र बना रहता है।

हिन्दू के अन्दर सभी मतों और विविध जातियों की परिभाषा हो सकती है किन्तु, 'हिन्दू' की परिभाषा नहीं हो सकती क्योंकि उसमें उन सभी का समावेश है। निःसन्देह समय-समय पर इसकी परिभाषा के अनेक प्रयास किये जा चुके हैं; किन्तु ऐसी सभी परि-भाषायें अपूर्ण सिद्ध हो चुकी हैं। वे पूर्ण सत्य को प्रकट नहीं करतीं।

हमारे समाज का मूल तथा कब से हम यहाँ सुसभ्य जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं इसकी तिथि से इतिहास के विद्वान अनभिज्ञ हैं। एक प्रकार से हम (हिन्दू) अनादि हैं। ऐसे समाज की व्याख्या करना ठीक उसी प्रकार असंभव है' जैसे उस 'परमसत्य' (ईश्वर) की परिभाषा करना, क्योंकि शब्दों का उद्भव तो उसके पश्चात् ही हुआ। यही बात हिन्दू समाज के लिए भी है। हमारा अस्तित्व उस काल से है जब किसी नाम की आवश्यकता ही नहीं थी। हम आर्य प्रबुद्ध लोग थे। हम लोग 'प्रकृति' तथा 'आत्मा' के नियमों के ज्ञाता थे। हमने एक महान सभ्यता, महान संस्कृति तथा एक अनुपम समाज व्यवस्था का निर्माण किया था। हम ऐसी सभी वस्तुओं का जीवन में समावेश कर चुके थे जो मानव के लिए हितकर थी। उस समय शेष मानवता द्विपाद पशु मात्र थी और इसलिए हमें कोई विशिष्ट नाम नहीं दिया गया था। जब कुछ समय बीतने पर विदेशों में भिन्न-भिन्न सभ्यताओं का उदय हुआ और वे विरोधी सम्प्रदाय हमारे सम्पर्क में आये तब नामकरण की आवश्यकता का अनुभव हुआ। भिन्न-भिन्न कालों में अलग-अलग नाम रखे गये। यह ठीक ऐसे ही था जैसे विभिन्न स्थानों पर गंगा को गंगोत्री, भागीरथी जाह्नवी तथा हुगली नाम से पुकारा जाता है और यह हिन्दू नाम जो सिन्धु नदी से लिया गया है हमारे इतिहास और परम्पराओं में हम से इतने काल से सम्बन्धित है कि अब वह हमारे लिये सम्पूर्ण विश्व के द्वारा स्वीकृत एवं आदर का नाम बन गया है।

खान अब्दुल गफ्फार खां (आत्म कथा)

इतिहासकारों के अनुसंधान कार्यों से ज्ञात होता है कि आर्य

जाति ने सबसे पहले इसी देश में आमू नदी के किनारे अपनी

आँखें खोली थीं और इसी धरती पर उसने चरम उत्कर्ष प्राप्त किया।

पहाड़ों से घिरा हुआ यही देश आर्गाना वेजों था जिसमें **पैगम्बर जरतुश्त** ने जन्म लिया। वे **बलख** के रहने वाले थे। बाद में वे ईरान चले गये। परन्तु उनकी पुस्तकें बलख के स्तुति गान से भरपूर हैं। इससे इस बात का प्रमाण भी मिलता है कि यही वह भूमि थी **जहां हिन्दुओंके पवित्र वेद की ऋचा-ओंने जन्म लिया और यही वह देश है, जिसके एक सपूत पाणिनी ने संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा और उसे साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह पाणिनी सिंध नदी की तटवर्ती तहसील सवावी के निवासी थे।**

इसी प्रकार इस देश की एक नदी और पश्तू के जिस शब्द से **'हिन्दू' शब्द की उत्पत्ति हुई वह 'सिंध' है जिसे 'आवसिंद' भी कहा जाता है। याद रहे कि पश्तू में प्रत्येक नदी को 'सिंध' कहा जाता है।** आर्यों के इस सम्मिलित कुल में, जिससे बहुत से आर्य दूसरे इलाकों में चले गये, दो बड़े घराने बाकी रह गये जिसमें से एक पख्तून और दूसरा बिलोच नाम से विख्यात है। ये दोनों अब भी अपने इस पुराने देश में रह रहे हैं। इसकी सुरक्षा, इसके निर्माण, और उन्नति का काम परमात्मा ने इन्हीं के सुपुर्द कर रखा है। **दूसरी जातियों में ऐसे लोग पैदा हो गये जिन्होंने अपने देश और जाति के लिए प्राण और धन सम्पत्ति का बलिदान कर दिया, हममें ऐसे लोग पैदा नहीं हुए और यदि कभी कोई पैदा हुआ भी तो हमने उसे काफिर बताया** वहाबी **गरदाना और इसे 'हिन्दू' घोषित किया है। विचित्र बात यह है कि मैं अभी तक हिन्दू हूँ। अभी तक कोई मुझे मुसलमान नहीं बना सका।**

वैदिक सम्पत्ति (पं० रघुनन्दन शर्मा)

प्राचीन बेवीलोनिया में उत्तम वस्त्रों के लिए 'सिंधु' शब्द के प्रयोग का पता लगा है तथा उस देश के भग्नावशेषों को देखकर यह विश्वास किया जाता है कि प्रागैतिहासिक काल में हिन्दुस्तान का पाश्चात्य देशों से सम्बन्ध था और फ़िनुशिया, अरब तथा भारतीय (हिन्दू) परशियन गल्फ, अदन, तथा पूर्वी अफ्रीका के बन्दरगाहों पर मिलते थे तथा व्यापारिक वस्तुओं के विनिमय के साथ वैचारिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हुआ होगा। इन व्यापारियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति उन देशों में पहुँची और वहाँ के निवासियों ने श्रेष्ठ हिन्दू संस्कारों को स्वीकार कर लिया।

डेरियस—दारा, या दारावश-आखानी राजवंश का तृतीय सम्राट था। इसने ५२२ ई० पू० से ४८६ ई० पू० तक शासन किया। भारत पर किये गये आक्रमणों का उल्लेख उसके अभि-लेखों में पाया जाता है--

(१) बेहिरीन अभिलेख ५२० से ५१८ ई० पू०
(२) पर्सीपोलिस अभिलेख ५१८ से ५१५ ई० पू०
(३) नक्शे रुस्तम अभिलेख ५१५ ई० पू०
(४) हमदन अभिलेख ई० पू०

पर्सीपोलिस अभिलेख में **'हिन्दू'** शब्द आया है। पर्सीपोलिस तथा नक्शे रुस्तम अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि गान्धार देश के निवासी हिन्दुओं पर भी उसका अधिकार हो गया था।

३३० ई० पू० सिकन्दर ने आखमानी साम्राज्य की राजधानी **'परसिपोलिस'** पर अधिकार कर लिया था और डेरियस तृतीय को पूर्णतया पराजित कर दिया। मई सन् ३२७ ई० पू० में वह भारत की ओर मुड़ा।

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा स्वीकृत 'हिन्दू' की परिभाषा

आज जब हम दुनिया के नक्शे पर नजर डालते हैं तो दिखाई देता है कि 'हिन्दू' भारत में ही सीमाबद्ध नहीं है। हिन्दू तत्व ज्ञान यद्यपि भारतीय ऋषियों, तथा चिन्तकों की देन है परन्तु इस तत्व ज्ञान को परिसीमित करने का विचार भारत के मनीषी विद्वानों के मस्तिष्क में कभी नहीं रहा। उनका उन्मुक्त चिन्तन चराचर जगत के व्यवहार के अनुशीलन के फलस्वरूप मानवमात्र के कल्याण हेतु था। पड़ोसी नेपाल देश घोषित हिन्दू राष्ट्र है। मारिशस, ट्रिनिडाड में हिन्दुओं का बहुमत है। अमरीका, इंग्लैण्ड आदि अन्य देशों में प्रचुर संख्या में हिन्दू रहते हैं। भारत में लगभग ५७ करोड़ हिन्दुओं के अलावा विश्व के अन्यान्य देशों में लगभग ३ करोड़ हिन्दू रहते हैं। अतः वर्तमान जागतिक परिस्थितियों के संदर्भ में **'हिन्दू'** की परिभाषा पर विक्रम सं० २०२३ प्रयाग में आयोजित **विश्व 'हिन्दू परिषद् महासम्मेलन** में विचार हुआ। विभिन्न मत, सम्प्रदाय के धर्माचार्यों, जगद्गुरू शंकराचार्यों, मठाधिपतियों तथा पचीस हजार से अधिक प्रतिनिधियों, मनीषी पंडितों तथा साधु संतों ने **'हिन्दू'** की निम्नलिखित परिभाषा को मान्यता प्रदान की —

हिन्दू लक्षणम्

भारतीयर्षिं संप्रक्तान् इहामूत्रार्थ साधकान्।
योऽङ्गीकरोति सश्रद्ध सत्सिद्धान्तान् सनातनान् ॥१॥
महात्मभिर्दिव्य शीलैः काले - काले प्रवर्तितान्।
सम्प्रदायानाद्रियते यः सर्वान् पारमार्थिकान् ॥२॥
यत्रकुत्रापि जातोऽसोवाऽस्तु यः कोऽपि जन्मना।
सच्छीलोदार चरितः सोऽत्र हिन्दुरिति स्मृतः ॥३॥

अर्थात् भारतीय ऋषियों द्वारा कहे गये लोक-परलोक साधक पुरातन सत्सिद्धान्तों को जो श्रद्धापूर्वक स्वीकार करता है और दिव्य चरित्र वाले महापुरुषों द्वारा समय-समय पर प्रवर्तित समस्त पारमार्थिक सम्प्रदायों का जो आदर करता है ऐसा सदाचारी और सच्चरित्र व्यक्ति चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो या जन्म से कोई हो 'हिन्दू' है,

संविधान तथा सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार 'हिन्दू' की परिभाषा

"हमारे **संविधान** निर्माता 'हिन्दू धर्म' की सार्वभौम विशालता से भली-भाँति परिचित थे, अतः धर्माचरण की स्वतंत्रता के मूलभूत अधिकार को मान्यता देते हुए यह स्पष्टीकरण कर दिया है कि 'हिन्दू' का अर्थ करते समय सिख, जैन, या बौद्ध धर्मावलम्बियों को उसमें सम्मिलित माना जायगा।

संविधान के इस निर्देशन के अनुसार **हिन्दू विवाह अधिनियम** १९५५, **हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम** १९६६, **हिन्दू अल्पवयस्क तथा अभिभावक अधिनियम**, १९५६, **हिन्दू दत्तक तथा पोषण अधिनियम** १९५६ इन सब लोगों पर लागू होते है जो हिन्दुत्व की इस व्यापक परिभाषा के अन्तर्गत हिन्दू माने जाते हैं। उदाहरण स्वरुप हिन्दू विवाह अधिनियम की दूसरी धारा में यह उल्लेख कर दिया गया है कि यह अधिनियम उन सब पर लागू माना जायगा—

(अ) जो हिन्दू धर्म को उसके किसी रुप में मानते हैं जिसमें वीर शैव, लिंगायत, ब्रह्मो समाजो, प्रार्थना समाजो, और आर्य समाजो सम्मिलित हैं।

(ब) जो बुद्ध, जैन या सिख हैं।

(स) और हर उस व्यक्ति पर जो अधिनियम प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत अधिकृत नागरिक के रुप में रहता है और मुसलमान, पारसी, ईसाई या यहूदी धर्मावलम्बी नहीं है।

इसी प्रकार की व्यवस्था अन्य तीनों अधिनियमों में भी है।

× × ×

हिन्दू धर्म तथा जीवन दर्शन की मूलभूत मान्यता यह है कि ईश्वर तक पहुंचने के अनेक मार्ग हैं।

(यज्ञ पुरुषदास बनाम मूलदास, आल इंडिया रिपोर्टर १९६६)

मूल्य-- १ रु० ५० पैसे

मुद्रक :

श्री राम मुद्रणालय, ७० पी० डी० कृष्णनगर, इलाहाबाद

दूरभाष : ५०४०४